"विश्व शांति में जैन धर्म का योगदान "

डॉ0 कीर्ति शुक्ला

असिस्टेंट प्रोफेसर -संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर,

जनपद -चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

आज भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में अशांति का वातावरण निर्मित हो गया है ।इसका प्रमुख कारण आतंकवाद है । आतंकवाद ने विश्व के मानव मन को भया क्रांत कर दिया है ।सभी तरफ आतंकवाद की गूंज सुनाई देती है ।चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है। आज विश्व का कोई भी देश आतंकवाद से अछूता नहीं है। चाहे वह पूंजीवादी अमेरिका हो, साम्यवादी चीन हो ,समाजवादी रूस हो या फिर विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत। हिंदुस्तान हमारी जन्मभूमि है। अतः बात भारत से प्रारंभ करते हैं ।हम देखते हैं कि भारत का कोई भी प्रदेश आतंकवाद से अलग नहीं है ।अब यहां मानव मन में प्रश्न उठता है कि आतंकवाद क्या है? और मनुष्य आतंक की प्रवृत्ति अपनाने की ओर क्यों अग्रसर होता है? इस प्रश्न पर हमें विश्व स्तर पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है ।मेरी दृष्टि में "स्वार्थ से प्रेरित ईर्ष्या लोभ से ग्रसित, मानवता विरोधी दृष्टिकोण को अपनाते हुए किसी भी व्यक्ति द्वारा अपनी कोई इच्छा किसी व्यक्ति से बलपूर्वक मनवाना ही आतंकवाद है"। अतः कहा जा सकता है कि मानवीय संवेदना शून्य मन ही आतंकवाद की जड़ का प्रमुख कारण है। समाज की यह कैसी विडंबना है कि यहां मानव ,मानव का नरसंहार कर रहा है। देखा जाए तो आतंकवाद का न तो कोई धर्म है, ना कोई मजहब। आतंकवाद न हिंदू है ,न मुसलमान है , न सिक्ख, न ईसाई ।मेरे अनुसार आतंकवाद मनुष्य मन की एक विक्षिप्त दशा का नाम है। आतंकवाद की दूसरी प्रमुख जड़ धार्मिक भेदभाव ,धार्मिक द्वेष की भावना का पैदा होना है, जब एक धर्म, दूसरे धर्म के प्रति कटुता के भाव कह दृष्टिकोण अपनाएगा तो मनुष्य में धार्मिक हिंसा का भाव पैदा होगा ,जिसे हम "धार्मिक आतंकवाद "का सकते हैं। इस प्रकार हिंसा के वातावरण में हमें धर्म के सही स्वरूप को समझने की आवश्यकता है ।हमें उन "पवित्र मूल्यों "को उजागर करना चाहिए जो सभी धर्मो में समान रूप से मौजूद हो ।हमें सभ्यताओं के संघर्ष सरीके कलुषित दर्शनों एवं विचारों के विरुद्ध अभियान छेड़ना चाहिए। हमें सभ्यताओं के समागम के विचार का प्रसार करना चाहिए "पवित्र मूल्य" प्रकृति के उत्कृष्ट आदर्श हैं । हमें सभी समुदायों के धीर -गंभीर लोगों को प्रचार -प्रसार की खातिर पवित्र मूल्यों की सही व्याख्या के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ।प्रश्न उठता है कि आज हिंसा से भरे वातावरण में ऐसा कौन सा धर्म है जिसके "पवित्र मूल्यों "का पालन करने से आतंक रूपी हिंसा से बचा जा सके। ऐसे समय में जैन धर्म की उपयोगिता महत्वपूर्ण है। जहां तक जैन धर्म के उपदेश का प्रश्न है वह अत्यंत व्यावहारिक ,विवेकपूर्ण सर्वकालिक ,एवं सार्वभौमिक है ।संसार के सभी प्राणी दुःखग्रस्त हैं ।वे सभी दुःख से निवृत्ति एवं सुख की प्राप्ति चाहते हैं ,एतदर्थ प्रयत्नशील रहते हैं। भ्रमवश वे इच्छाओं की पूर्ति में सुख खोजते हैं किंतु मनुष्य का भ्रम शीघ्र ही दूर हो जाता है जबकि वह देखता है की प्रथम तो कोई भी इच्छा पूर्णतया प्राप्त नहीं होती दूसरे उसकी तृप्ति की चेष्टा में अत्यधिक कष्ट उठाना पड़ता है। यह भी आवश्यक नहीं की इच्छा की पूर्ति हो जाए ।यदि एक इच्छा की पूर्ति हो भी जाती है तो उसके स्थान पर अनेक नवीन इच्छायें उत्पन्न हो जाती हैं । मानवीय इच्छाएं स्वभावतः परिगुणित हो जाया करती है। अतः इच्छा तृप्ति सुख का उपाय नहीं है ।वास्तविक

सच्चा सुख तो विशुद्ध एवं शाश्वत ही होना चाहिए और उसका उपाय इच्छाओं की पूर्ति नहीं वरन आत्मसंयम और इंद्रिय जय और इच्छाओं का निरोध है। वह सच्चा सुख पूर्ण स्वतंत्रता का प्रतीक मोक्ष अवस्था में ही संभव है ।ज्ञान –आचरण रूप आत्मिक रत्न की समन्वयात्मक साधना, पूर्णता एवं सिद्धि में निहित है। आशय यह है कि जैन धर्म में पैर से अगर जानबूझकर कोई छोटे से जीव को भी मारता है तो वह पाप का भागी होता है ।जब इतनी सुंदर व्याख्या व इतनी कोमल भावनाओं को जैन धर्म में समाहित किया गया है तो जैन धर्म में अहिंसा के पालन से तो सारी समस्या ही हल हो सकती है ।जैन धर्म में हिंसा को विस्तृत रूपों में बताया गया है –

(1) हिंसा करना हिंसा है ।

(2) हिंसा की प्रेरणा देना उससे बड़ी हिंसा है ।

(3) हिंसा की कल्पना करना सबसे बड़ी हिंसा है ।

आज के युग में मनुष्य के मन की जब कोई बात नहीं सुनता तो बेवश होकर वह हिंसा पर उतर आता है क्योंकि हमने अच्छे नैतिक मूल्यों को स्थापित तो कर दिया है पर उन्हें भूलते जा रहे हैं। आज वक्त आ गया है कि उन नैतिक मूल्यों को नए तरीके से स्थापित किया जाए ।जैन शासन में कहां गया है –

"दुष्टा हिंसादि दोषेषू निरताः पापकारिणः ।

शिष्टास्त क्षान्ति शैचादिगर्णैधर्मपराः नराः॥

जो व्यक्ति हिंसा आदि पांच पापों में तत्पर हो पाप कार्य करते रहते हैं वे दुष्ट कहलाते हैं तथा जो संतोष ,आदि गुणों द्वारा धर्म ग्रहण करने में तैयार होते हैं वे शिष्टजन कहे जाते हैं । अहिंसा जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत है मानव सभ्यता के इतिहास एवं विकास पर दृष्टिपात करने से यह तथ्य स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि स्वार्थ का त्याग तथा संवेदना, सहृदयता, सहयोग ,मैत्री, कारुण्य आदि अहिंसा के विभिन्न अंग ही मानवीय सभ्यता के मूलाधार है और उसकी प्रेरक शक्तियां हैं। मनुष्य का चरम विकास हिंसक प्रवृत्ति के सर्वथा परित्याग और अहिंसक प्रवृत्ति की पूर्ण उपलब्धि में ही निहित है। जिस समय मनुष्य इस महान वैज्ञानिक तथ्य का अनुभव कर लेता है कि, प्राणी को जीवन प्रिय है ,सब सुख चाहते हैं और जीवित रहने की भी सभी इच्छा रखते हैं। अतः किसी को भी मारना या शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट पहुंचाना अनुचित ही नहीं, भयंकर पाप है उसी समय से उसे व्यक्ति का आत्मिक विकास प्रारंभ हो जाता है और वह सभ्यकोटि में गिना जाता है। दूसरों की हित कामना में रत रहने वाली ऐसी अहिंसक आत्माएं ही धर्मात्मा कहलाती हैं ।यही कारण है कि विश्व में जब–जब और जहां–जहां जो भी धर्म प्रचलित हुए हैं उन सभी में प्रवर्तकों ने अपने उपदेशों में अहिंसा और विश्व मैत्री के सिद्धांत पर यथासंभव बल दिया और स्वार्थ और क्रूरता को हेय बताया ।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विश्व की प्रमुख समस्या आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने के लिए जैन धर्म पूर्ण रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकता है क्योंकि आज सामाजिक ,धार्मिक, राजनीतिक जीवन में अनेक प्रकार की विषमताएं देखने को मिलती हैं जिसका कारण स्वार्थपरता, संकीर्ण मनोवृत्ति और अहं है।जैन धर्म के समस्त उपदेश का उद्देश्य सुखद, समत्व या पारस्परिक समताभाव की स्थापना करना है। इन विषमताओं को संयम साधना और इच्छाओं पर नियंत्रण करके दूर किया जा सकता है। अहिंसा तथा "परस्परोग्रहोजीवनाम" के सिद्धांत के द्वारा किसी को भी कष्ट न पहुंचाना तथा दूसरों की सेवा –सहायता के लिए सदैव तत्पर रहना और आचौर्य एवं अपरिग्रह या परिग्रह परिमाण द्वारा समस्त आर्थिक का उन्मूलन करना अनेकांत द्वारा वैचारिक समत्व साधना, स्यादवाद वाक्य संयम और जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा द्वारा आत्मोन्नयन के पथ पर बढ़ते रहना ही जैन धर्म के उपदेशों का सार है ।वह देश और काल की सीमाओं में बद्ध नहीं है– सर्वकालिक

है, सार्वभौमिक है, विश्व के समस्त मानवों के लिए समान रूप से हितकर उपादेय और आचारणीय है। किसी धर्म से या मत से मूलतः इसका कोई विरोध नहीं है ।।जैन धर्म का एक अहिंसा रूपी सद्गुण विश्व की सभी आणविक शक्तियों को जो कि हिंसा का सबसे बड़ा साधन को विफल करने की सामर्थ्य रखता है। आवश्यकता इस अहिंसा की अमोघ शक्ति का उपयोग आतंकवाद को समाप्त करने के लिए क्या किया जाए अगर हम अहिंसा का सही प्रयोग करके हिंसक प्रवृत्तियों वाले आतंकवादियों के बीच करें तो निश्चित रूप से विश्व में शांति की स्थापना हो सकती है ।जैन धर्म के अहिंसा एवं सदाचार का प्रचार किया जाए तथा संयमित जीवन व्यतीत करने का उपदेश लोगों को दिया जाए। ऐसा करके विश्व में समन्वय एवं सहिष्णुता के दृष्टिकोण को सुदृढ़ आधार प्रदान किया जा सकता है। यदि आज भी हम इन सिद्धांतों का अनुकरण करें तो आपसी भेदभाव एवं धार्मिक कलह पूर्ण रूप से दूर हो जाएगी तथा विश्व में शांति ,बंधुत्व ,प्रेम एवं सहिष्णुता का साम्राज्य स्थापित होगा। इस प्रकार जैन धर्म आधुनिक युग में विश्व की समस्याओं विशेष कर आतंकवाद की समस्याओं के समाधान के लिए आज भी प्रासंगिक है ।अतः विश्व शांति की स्थापना करने के लिए व्यावहारिक रूप में अहिंसा ही सर्वोत्तम उपाय कारगर सिद्ध होगा।

संदर्भ सूची--

1) पंडित कैलाश चंद्र जी सिद्धांत शास्त्री पुस्तक, -जैन धर्म।

2) के. सी श्रीवास्तव- प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, इलाहाबाद 1998 ।

3) बलभद्र जैन ,-जैन धर्म का प्राचीन इतिहास दिल्ली (द्वितीय संस्करण)